International Research Journal of Education and Technology
Peer Reviewed Journal
ISSN 2581-7795

Bhartiya sahitya me mahilaoon ka yogdan

Dr. Geeta Dubey

Ass. Pro. (HINDI)

Brahmawart P. G. College

mandhana, Kanpur Nagar-209217

भारतीय साहित्य में महिलाओं का योगदान

डॉ गीता दुबे
सहायक आचार्य
ब्रह्मावर्त पी0जी0 कॉलेज,
मंधना, कानपुर–209217
ई–मेल
dr.dubey74geeta@gmail.com

शोध सार

महिलाओं ने हर क्षेत्र में अपने अधिकारों के लिए संघर्ष किया और जिसको स्वीकार करते हुए अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस तक मनाया गया। साहित्य में महिला लेखन की परंपरा उसी स्त्री के सम्मान, उसके अधिकार, और उसकी पहचान को लेकर रही है। भारतीय साहित्य के हर काल में महिलाएं अपनी रचनाओं के जरिए योगदान करती आ रही हैं, आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक।

भारतीय साहित्य के इतिहास में महिलाओं का योगदान अतुलनीय रहा है प्रत्येक काल के परिवर्तन के साथ–साथ महिलाओं की लेखनी ने अपूर्व कौशल का परिचय दिया है इस शोध प्रपत्र को उन महान विभूतियों के योगदान को स्मरण करने हेतु लिखा गया है ऐसी महान लेखिकाओं का परिचय देने की क्षमता मेरी लेखनी में नहीं है फिर भी उनके कौशल, भारतीय साहित्य में योगदान, समाज के लिए प्रेरणा, भक्ति भाव इत्यादि पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

दक्षिण भारत की आंडाल

आंडाल, जिन्हें **गोदादेवी** भी कहा जाता है, दक्षिण भारत के बारह हिन्दू कवि–संतों में से एक थी। उन्होंने तमिल भाषा में दो ग्रंथो की रचना की थी। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं **'तिरुप्पावै'** और **'नाच्चियार तिरुमोळि'**। **'तिरुप्पावै'** में उन्होंने अपने आप को एक मवेशी लड़की मानते हुए भगवान कृष्ण की सेवा में लीन चित्रित किया है। भक्ति आंदोलन के समय 12 आलवार संत हुए और उनमें से 11 पुरुष थे, जबकि आंडाल एकमात्र महिला संत थीं।

© 2024, IRJEdT Volume: 06 Issue: 08 | Aug-2024

आंडाल ने दो साहित्यिक कृतियाँ लिखीं जो धारावाहिक तमिल छंद में हैं और साहित्यिक, दार्शनिक, धार्मिक सामग्री को व्यक्त करती हैं।

तिरुप्पावै

उनकी पहली रचना 'तिरुप्पावै' है, जिसमें वे अपनी भावना में एक गोपी की भावना करती हैं, जो कृष्ण के प्रति अनवरत भक्ति के लिए प्रसिद्ध गोपियों में से एक होती है। 'तिरुप्पावै' में आंडाल ने राधा को आदर्श गोपी के रूप में पूजा और ब्रज की गोपियों का भी आवाहन किया। नप्पिने को श्री वैष्णवधर्म में विष्णु को परम पत्नी के रूप में पहचाना जाता है। इन पदों में वे विष्णु की सेवा करने और एक ही जीवन में नहीं, बल्कि सभी काल में सुख प्राप्त करने की आकांक्षा को व्यक्त करती है। उन्होनें इस उद्देश्य के लिए अपनी और अपनी साथी गोपियों की धार्मिक व्रत (पावै) का वर्णन भी किया है। कहा जाता है कि **'तिरुप्पावै'** वेदों का अमृत है और यह दार्शनिक मूल्यों, नैतिक मूल्यों, पवित्र प्रेम, भक्ति, समर्पण, एकमानसिक उद्देश्य, गुणों और जीवन के अंतिम लक्ष्य की शिक्षा देता है।

आंडाल इस पाठ में कृष्ण की प्रशंसा करती हैं।

मेरी प्यारी लड़कियाँ आप सभी जानती हैं कि भारत (श्रीकृष्ण, जिनकी महिमा वर्णन से परे है और जिनके कार्य सामान्य समझ से परे हैं) उत्तर भारत में जन्मे और शुद्ध यमुना के महासागर में खेलने वाले हैं जो गोपियों के बीच एक रत्न दीप (पन्ने की दीपक) की तरह चमकते हैं जो अपनी मां यशोदा को नााम और प्रसिद्धि दिलाने वाले हैं। हम उनके पास शुद्धता में जाएंगें, हम उनके पाँवों में शुद्ध और चुनिंदा फूल बिछाएंगे और उनकी पूजा करेंगे। हम उनके बारे में गाएंगे और हम उनके बारे में (अविरत) सोचेंगे और इससे हमारे पाप, जो पहले से ही किए गए हैं और जो हम भविष्य में करने वाले हैं, सभी वे गिनती में जल की तरह गायब हो जाएंगे।

–तिरुप्पावै, पद 5

नाच्चियार तिरुमोळि

आंडाल की दूसरी रचना 'नाच्चियार तिरुमोळि' है, जो 143 पदो की कविता है। तिरुमोळि शब्द में तमिल के काव्यिक शैली में 'पवित्र वचन' का अर्थ होता है और **'नाच्चियार'** का अर्थ होता है देवी इसलिए शीर्षक का अर्थ होता है 'देवी के पवित्र वचन'। यह कविता पूरी तरह से आंडाल की विष्णु, दिव्य प्रिय के प्रति उनकी तीव्र आकांक्षा को प्रकट करती है। आंडाल ने शास्त्रीय तमिल के काव्यिक नियमों का उपयोग किया और वेदों और पुराणों की कहानियों को बीच–बीच में डालकर ऐसी छवियाँ बनाई हैं जो भारतीय धार्मिक साहित्य के सम्पूर्ण विस्तार में असाधारण हो सकती हैं।

'नाच्चियार तिरुमोळि' में आंडाल भगवान की इच्छा करती हैं और कहती हैं कि वह भगवान से शादी करेंगी तो उसे 1000 पात्र **'अक्करवडिसल'** देगी, जो 11वीं शताब्दी में संत रामानुज द्वारा पूरा किया गया था।

फिर भी, परंपरागत वैष्णव संस्थान **'नाच्चियार तिरुमोळि'** को उतना प्रसारित नही करते, जितना कि वे 'तिरुप्पावै' को प्रसारित करते हैं, क्योंकि **'नाच्चियार तिरुमोळि'** जयदेव की 'गीत गोविंद' की तरह एक ऐरोटिक धार्मिक शैली में आती है।

कश्मीर की लल्लेश्वरी / लल्लद्यद

© 2024, IRJEdT Volume: 06 Issue: 08 | Aug-2024

लल्लेश्वरी, जिन्हें लल देद (Kashmiri pronuciation:'la:[d'ad]1320-1392) के नाम से भी जाना जाता है, कश्मीरी शैववाद दर्शन के एक कश्मीरी मिस्टिक थीं। उन्होनें वाख या वाक्य के रूप में जाने वाली आध्यात्मिक कविता की शैली की रचना की थी) संस्कृत शब्द वाच् से (1 उनकी कविताएँ कश्मीरी भाषा की प्रारंभिक रचनाओं में से है और यह कश्मीरी साहित्य के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा हैं। लल्लेश्वरी **'मां लल'** या **'मां लल्ला'** (के अन्य नामों में लल द्याद) द्याद का अर्थ दादी मां होता है(लल्ला आरिफा, लल दिद्दी, लल्लेश्वरी लल्ला योगिश्वरी/योगेश्वरी और ललिश्री शामिल हैं।

लल्लेश्वरी की आध्यात्मिक जीवनशैली लल्लेश्वरी ने अपने विद्या, अद्भुत शक्तियों और धार्मिक चर्चाओं के कई प्रदर्शन किए, यहाँ तक कि सूफी संतो के साथ भी। एक बार मुस्लिम सूफी दर्शक शाह हमदान को कहा जाता है कि उन्होंने अपनी अद्भुत शक्तियों का प्रदर्शन किया और अपने सिर पर चावल और पानी की एक मटकी रखकर पानी को उबाल दिया। लल्लेश्वरी उसे एक नदी के किनारे ले गईं और अपने हाथ को पानी में डालकर उसे उबलने के तापमान पर लाया।

लल्लेश्वरी के लिए व्यक्तिगत वस्त्र और सामाजिक शिष्टाचार की दुनियावी बातें कुछ भी महत्त्व नहीं रखतीं थीं और वह नग्र या अर्ध–नग्र घूमती थीं।

उन्होने किसी भी कठिन और दृढ़ धर्म का प्रचार नहीं किया उन्होने अनुष्ठान से भी इनकार किया। वह प्रकृति और शेव संप्रदाय के साथ पूरी तरह से मेल खाते हुए जीवन की एक ऐसी दिशा को प्रस्तुत करती थीं, जो प्राकृतिक और शेव संप्रदाय के साथ सामजस्य में थी।

लल्लेश्वरी की कुछ रचनाएँ

कुछ लोग मेरे ऊपर आलोचना कर सकते है, कुछ मुछ पर शाप दे सकते है, वे जो चाहें बोल सकते है। कुछ लोग मेरी प्राकृतिक ज्ञान की पुष्पों से पूजा कर सकते है, फिर भी मुझे इस प्रकार की आलोचना या प्रशंसा से चिंता नही होती, क्योंकि मेरी खुद की चिंता है और मुझे दूसरों के बारे में क्या कहना है, उस पर कोई आपत्ति नही है।

मैनें अपने अनंत स्वयंज्ञान की अविरत खोज में थकान महसूस की, सोचते हुए कि कोई भी उसमें भाग नहीं ले सकता, छिपे हुए ज्ञान को, आखिरकार, मैं उसमें डूब गई और दिव्य–बार में प्रवेश पा सकी, वहां गोबलेट पूरी तरह से भरी होती है, लेकिन किसी को इन्हें पीने की हिम्मत नहीं होती।

मन फूल बेचने वाला है और विश्वास फूल है। पूजा को मानसिक समता के अभियानों के साथ किया जाना चाहिए। शिव को आंसू का स्नान देना चाहिए। मंत्रो को चुपचाप पढ़ना चाहिए, इन्हें दिखावा नहीं करना चाहिए। इसी तरह से केवल आत्मचेतना को अंदर से जाना जा सकता है।

महाराष्ट्र की कवयित्री सावित्रीबाई फुले

सावित्रीबाई फुले को देश की पहली शिक्षिका ओर समाज सेविका के रूप में जाना जाता है। वह इसके साथ ही एक कवियत्री भी थीं। स्त्री शिक्षा का प्रचार–प्रसार करने वाली प्रथम महिला सावित्रीबाई फुले मरीठी कविता की आधुनिक कवयित्री मानी जाती हैं। उन्होंने अपनी कलम के माध्यम से भी सामाजिक कुरीतियों का विरोध किया। जब वह नौ वर्ष की थीं, उनका विवाह ज्योतिराव फुले के साथ हुआ था। विवाह के बाद ही उन्होने शिक्षा ग्रहण की थी और उसके बाद समाज सुधारक, शिक्षिका और कवयित्री के तौर पर रूढ़िवादी प्रथाओं पर वार किया।

© 2024, IRJEdT Volume: 06 Issue: 08 | Aug-2024

कवयित्री के तौर पर उन्होंने मराठी साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान किया। उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से जातिगत भेदभाव को मिटाने और महिलाओं को शिक्षा के लिए जागरूक करने का काम किया। सावित्रीबाई ज्योतिराव फुले स्वयं मराठी कवियत्री रही हैं। उन्होंने कुल दो कविता संग्रह लिखे है। 23 साल की उम्र में साल 1854 में उनका लिखित रूप में पहला संग्रह 'बावन काशी' प्रकाशित हुआ था।

इस कविता संग्रह में 41 रचनाएं हैं। उनका दूसरा रचना संग्रह **'सुबोध रत्नाकर'** 1892 में प्रकाशित हुआ था। फुले की रचनाएं दलितों के अधिकारो के लिए, वंचित वर्ग के अधिकारो के लिए आवाज उठाने वाली कृति बनीं।

ज्योतिष पंचाग हस्तरेखा में पड़े मूर्खों

स्वर्ग नरक की कल्पना में रुचि

पशु जीवन में ऐसे भ्रम की जगह न कोई

मूर्ख मकड़जाल से निकले न ही

हाथ पर हाथ धरे–बैठे मूर्खों निठल्लो को

कैसे इन्सान कहें?

महाराष्ट्र की ताराबाई शिंदे

ताराबाई शिंदे एक नारीवादी समाज सुधारक महिला थीं। 19वीं शताब्दी में उन्होंने पितृसत्ता और जाति का विरोध किया। समाज में जिस तरह से पुरुषों का वर्चस्व था और पूरी तरह से गुलाम बना कर रखा जा रहा था, उस स्त्री की पहचान के लिए इन्होनें पितृसत्ता के विरुद्ध आवाज उठायी। इनका मराठी भाषा में 1882 का लिखा हुआ 'स्त्री–पुरुष' एक बहुत महत्त्वपूर्ण कृति है। ताराबाई शिंदे ने उसमें महिलाओं की सामाजिक स्थिति और पितृसत्ता के बारे में लिखा है। नारी के समर्थन में उनकी तीक्ष्ण अभिव्यक्ति थी– ''जिसके हाथ में लाठी वही बलवान, बाकी सब निर्बल यही तो आचरण है तुम्हारा, तुमने अपने हाथों में सब धन दौलत रखकर नारी को कोठी में दासी बनाकर, धौंस जमाकर दुनिया से दूर रखा, उस पर अधिकार जमाया, नारी के सदगुणों को दुर्लक्षित कर अपने ही गुण अवगुण के दिए तुमने जलाए, नारी को विद्याप्राप्ति के अधिकार से वंचित कर दिया, उसके आने–जाने पर रोक लगा दी।''

एक ओर हम देख रहे है कि वे पुरूषों के वर्चस्व के विरुद्ध आवाज उठा रही है तो दूसरी ओर स्त्रियों को उनकी अज्ञानता के ढेर से बाहर निकालने का भरसक प्रयास कर रही हैं। वे कहती हैं स्त्रियां अपने अधिकारों को समझती नही हैं, उन्हें पता ही नही की उनका क्या कर्तव्य है? उनका क्या अधिकार है? ये स्त्रियां अज्ञानता के गर्त में इस तरह डूबी हुई है कि आपस में जब मिलती भी हैं तो उन्हें दुनियादारी की समझ ही नहीं है। ताराबाई शिंदे स्त्रियों के अधिकार के लिए, स्त्री शिक्षा के लिए संघर्ष कर और उन्हें पहचान देने का कार्य करती रहीं। वह विधवा जीवन व्यतीत करने वाली स्त्रियों की वकालत करते हुए पुरुषों से सवाल करती है कि ''यदि विधवा को अपना उर्वरित जीवन अंधियारा,

बदसूरत और भगवान का नाम लेकर ही बिताना है तो विधुर हुआ पुरुष भी यह स्थिति क्यों नही अपनाता? वह क्यों दूसरी शादी कर गृहस्थ अपनाता है? शास्त्रों के सारे नियम महिलाओं के लिए ही क्यों? धर्म तो सबके लिए समान है। ताराबाई शिंदे अपने हर काम से पुरुष सत्ता को चुनौती देती हुई दृष्टिगोचर होती है।

साहित्य के विभिन्न विषयों को लेकर एक नई सोच के साथ महिलाओं की समस्या, यौन, शोषण, परिवारिक समस्याएं, वर्चस्व की समस्याओं को लेकर महिला लेखन चला आ रहा ह। महिला लेखन अपने अधिकारों के प्रति जागृति का काम कर रहा है। आधी आबादी की अपनी एक पहचान है, उसकी अपनी एक सोच है और उसको भी अपनी बात रखने का अधिकार है।

ताराबाई शिंदे की प्रसिद्ध साहित्यिक रचना **'स्त्री पुरुष तुलना'** है। इस निबंध में शिंदे ने जाति की सामाजिक असमानता की आलोचना की साथ ही उन्होनें उन दूसरे समाज सुधारको की पितृसत्ता के परिप्रेक्ष्य में दी गई परंपरागत दृष्टिकोण की भी आलोचना की जो हिन्दू समाज में विरोध की मुख्य रूप मानी जाती थी। सुसी थारू और के ललिता के अनुसार, **'स्त्री पुरुष तुलना'** शायद भक्ति काल की कविता के बाद पहला पूर्ण और अवशिष्ट नारीवादी तर्क है लेकिन ताराबाई की रचना इसलिए भी महत्त्वपूर्ण हैं क्योंकि जब बुद्धिजीवियों और समाज सुधारकों को हिन्दू विधवाओं के जीवन की कठिनाइयों और अन्य स्पष्ट अत्याचारों की प्रमुख चिंता थी, तो ताराबाई शिंदे, जो अकेले काम कर रही थी, नारीवादी विचार की व्यापकार्थकता को शामिल करने में समर्थ थीं। उनका संकेत है कि हर जगह महिलाएं उसी तरह दुखित हैं।''

राजस्थान की मीराबाई

मीरा, जिन्हें मीराबाई के नाम से जाना जाता है, 16वीं शताब्दी की एक प्रमुख आध्यात्मिक कवयित्री थीं। वह कृष्ण की उपासक थीं और उन्होंने अपनी रचनाओं में कृष्ण के प्रति भक्तिभाव को प्रदर्शित किया। मीराबाई की लिखी कविताओं को 'पद' कहा गया है। उनकी प्रमुख रचनाओं में **राग गोविंद, गोविंद टीका, राग सोरठा, मीरा की मल्हार, मीरा पदावली, और नरसी जी का मायरा** शामिल हैं। मीराबाई की रचनाएँ आज भी भक्ति गीत के तौर पर गाई जाती हैं। कुछ गीतों का अंग्रेजी अनुवाद भी हो चुका है।

मीराबाई को सामंती व्यवस्था, सामंती राज्य सत्ता के प्रति विद्रोह के लिए भी जाना जाता है। उन्होंने ससुराल में पति की मृत्यु के बाद रूढ़िवाद को चुनौती दी और विधवा प्रथा का पालन नही किया। उनका जीवन संघर्ष से भरा हुआ था। वह कहती थीं ''राणा म्हाणे या बदनामी लागे मीठी कोई निंदों, कोई बिंदो मैं चलूँगी चाल अपूठी। '' उन्होने अपने विरोध को जीवन की अभिव्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया। ''बरजी मैं काहू कि नाहि रहूं। छाड़ि दई कुल की कानि का करिहै कोई। लोक लाज कुलकाण जगत की दई बहाये जस पाणी।'' उन्होंने सामंती व्यवस्था के प्रति विद्रोह का स्वर लेकर अपनी आत्म अभिव्यक्ति की पीड़ा उसे छटपटाते हुए दिखाया:

मोर बस्या म्हारे नेणण माँ नंदलाल।

मुकुट मकराकृत कुण्डल अरुण तिलक सोहाँ भाल।

मोहिनी मूरत सावरा सूरत नेण बण्या विशाल।

अधर सुधा रस मुरली राजाँ उर बैजन्ती माल।

मीरा प्रभु संतो सुखदायाँ भगत बछल गोपाल।।3।

© 2024, IRJEdT Volume: 06 Issue: 08 | Aug-2024

भावार्थः मीरा बाई ने श्री कृष्ण की माधुरी मूर्ति

को अपने हृदय में बसाने का निवेदन किया है।

कृष्ण का सुंदर रूप बड़े–बड़े नेत्र, अधरों पर

अमृत के समान वर्षा करने वाली मुरली और

गले में भव्य वैजयंती माला सुशोभित है। कृष्ण

की कमर में बंधी सुन्दर घण्टियाँ व उनसे

निकलने वाले घुंघरू के मधुर स्वर सभी संतों

को सुख देने वाले हैं। मीरा निवेदन करती है

कि भक्त वत्सल श्रीकृष्ण मेरे नयनो में निवास करें।

निष्कर्ष

प्रगतिशील लेखक आंदोलन में पुरुष आवाजों का प्रभुत्व रहा। मुख्यतः पुरुष बुद्धिजीवियों द्वारा संचालित था। जिन्होने सामाजिक समानता की वकालत के बावजूद, अक्सर जेंडर के मुद्दों को ठीक से संबोधित नही किया। महिलाओं की आवाजें मुख्य रूप से वर्ग, सघर्ष और औपनिवेशिक विरोध पर केन्द्रित प्रमुख पुरुष कथाओं द्वारा आच्छादित रूप में रह जाती थीं। महिला लेखकों को अक्सर लिंग विशिष्ट आलोचना का सामना करना पड़ता था। उनके कार्यो को अक्सर उनके पुरुष समकक्षों द्वारा संबोधित ''अधिक महत्त्वपूर्ण '' मुद्दों की तुलना में द्वितीयक के रूप में रखा जाता था। इससे उनके साहित्यिक योगदानों का अवमूल्यन हुआ और आंदोलन के भीतर उनके प्रभाव को सीमित कर दिया। प्रगतिशील लेखक आंदोलन में महिलाएं अपने पुरुष सहयोगियों की तुलना मं सीमित संस्थागत समर्थन प्राप्त करती थीं। उन्हें मान्यता प्राप्त करने में कठिनाइयां होती थीं और अक्सर प्रमुख साहित्यिक और संगठनात्मक भूमिकाओं से बाहर रखा जाता था, जिससे आंदोलन की दिशा और प्राथमिकता पर उनका प्रभाव सीमित हो गया था।

नारी शब्द की उत्पत्ति भगवान शिव के अर्धनारीश्वर स्वरूप से मानी गई है। इसमें यह बोध होता है कि नारी के बिना पुरुष पूर्ण नही है, और पुरुष द्वारा किया गया कार्य भी अपूर्ण है। महिलाएं सनातन काल से अपने अस्तित्त्व को सतीत करती आ रही हैं। इसकी अभिव्यक्ति विभिन्न रूपों में होती है, जैसे माता मंदोदरी, माता सीता, माता उर्मिला, माता तुलसी, माता सुलोचना, माता शबरी, माता अनुसूया और अन्य । यह विभूतियां हमारे समाज के लिए प्रेरणा स्त्रोत रही हैं। इसी तरह कवित्रियों ने भी साहित्य, नाट्य और कविताओं में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ऐसे कवियों में **मीराबाई, महादेवी वर्मा, अंडाल, कश्मीर की लल्लेश्वरी, सावित्रीबाई फुले, और ताराबाई शिंदे** शामिल हैं।

© 2024, IRJEdT Volume: 06 Issue: 08 | Aug-2024

संदर्भ ग्रंथ सूचीः–

1. Bryant, Edwin Francis (2007). Krishna: A Sourcebook. Oxford University Press. p. 188. ISBN 978-0-19-803400-1.
2. Chitnis, Krishnaji Nageshrao (2003). Medieval Indian Histroy. Atlantic Publishers & Dist. p. 116. ISBN 978-81-7156-062-2.
3. S.M. Srinivasa Chari (1January 1997). Philosophy and Theistic Mysticism of the Alvars. Motilal Banarsidass. pp. 11-12. ISBN 978-81-208-1342-7.
4. Greg Bailey; Ian Kesarcodi-Watson (1992). Bhakti Studies. Sterling Publishers. ISBN 978-81-207-0835-8.
5. Pintchman, Tracy (2007). Woman's lives, women's rituals in the Hindu Tradition. Oxford: Oxford University Press. pp. 181-187. ISBN 978-0198039341.
6. Rao, A.V. Shankaranarayana (2012). Temples of Tamil Nadu. Vasan Publications. pp. 195-99. ISBN 978-81-8468-112-3.
7. Sampath Kumaracharya, V.S. (2002). Musings on Andal's Tiruppavai: A Garland of Thirty Multifaceted Mystic Verses (in Tamil and English) (First ed.) Tirupati, India: Tirumala Tirupati Devasthanams. ASIN B09FQ9JX1L. [Tamil text with Enligh translation]. Archived from the original on 4 March 2016. Retrieved 17 September 2015.
8. Lalla Yogishwari, Anand Kaul, reprint form the Indian Antiquary, Vols. L, LIX, LX, LXI, LXII.
9. Lalla-Vakyani, Sir George Grierson and Dr. Lionel D. Barnett Litt. D. (R. A. S. monograph, Vol. XVII, London 1920). ISBN 1846647010.
10. Vaakh Lalla Ishwari, Parts I and II (Urdu Edition by A.K. Wanchoo and English by Sarwanand Chaaragi, 1939).

© 2024, IRJEdT Volume: 06 Issue: 08 | Aug-2024

11. Lal Ded by Jayalal Kaul, 1973, Sahitya Akademi, New Delhi.
12. The Ascent of Self: A Reinterpretation of the Mystical Poetry of Lalla-Ded by B.N. Parimoo, Motilal Banarsidass, Delhi. ISBN 81-208-0305-1.
13. The Word of Lalla the Prophetess, by Sir Richard Carnac Temple, Cambridge 1924.
14. Lal Ded: Her life and sayings by Nil Kanth Kotru, Utpal publications, Srinagar, ISBN 81-85217-02-5.
15. Women's Day | सावित्रीबाईच्याही आधी एका अमेरिकी महिलेने सुरू केली होती मुलींची शाला | american marathi mission misses Cynthia Farrar Girl's education at early age". eSakal-Marathi Newspaper. Archived from the original on 10 March 2023. Retrieved 10 March 2023.
16. "सावित्रीबाई फुलेः भारतीय स्त्री मुक्तीच्या जनक | Savitribai Phule-Pioneer of Women's Education and Liberation". eSakal- Marathi Newspaper. Archived from the original on 3 January 2022. Retrieved 3 January 2022.
17. " How Savitribai Phule, India's one of the pioneer female teachers, dealt with abusers hell bent on preventing her from educating girls". India Today. Archived from the original on 3 January 2022. Retrieved 3 January 2022.
18. "Savitribai Phule Jayanti: सावित्रीबाई फुले यांनी केलेल्या सामाजिक आणि शैक्षणिक कार्याचाथोडक्यात आढावा''... eSakal-Marathi Newspaper. Archived from the original on 21 March 2023. Retrived 21 March 2023.
19. Sundararaman, T. (2009). Savitribai Phule first memorial lecture, [2008]. National Council of Educational Research and Training. ISBN 978-81-7450-949-9. OCLC 693108733

© 2024, IRJEdT Volume: 06 Issue: 08 | Aug-2024